गूगल क्लासरूम

कोरोना की महामारी ने,
चारों तरफ मचाया हाहाकार।
स्कूल पर लग गए ताले,
पढ़ाई के पड़ गए लाले।

टेक्नोलॉजी का मैं वरदान,
गूगल क्लासरूम है मेरा नाम।
ज़िंदगी की यही है कसौटी,
मुझसे ही बच्चों की ख़ुशियाँ लौटीं।

अध्यापिकाओं और बच्चों का हूँ मैं एकमात्र सहारा,
मैंने ही उन्हें इस मुसीबत से उभारा।
था मैं पहले उनकी एक मजबूरी,
बन गया अब मैं उनके विकास के लिए ज़रूरी।

कठिन परीक्षा की है यह घड़ी,
धैर्य ही है छात्रों की इकलौती छड़ी।
मुसीबत के यह काले बादल भी छँट जाएँगे,
मुझे ' गुडबाय' बोल छात्राएँ फिर से स्कूल लौट पाएँगें।

अतिरा दीवान
कक्षा - सप्तम्, वर्ग- बी।